एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कम खर्च में फसलों का रोगों से छुटकारा पाने के लिये बीजोपचार अपनायें

(*भवानी सिंह मीना[1], मोनिका मीणा[1], भरतलाल मीना[1], मनीषा मीणा[2] एवं पूजा शर्मा[1])
[1]श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
[2]महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
*125bhawanisingh@gmail.com

फसलों में बीज उपचार कर लगभग 08–10 प्रतिशत उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। फसलों की उत्पादकता में बढ़ोतरी करने हेतु आवश्यक है कि फसलों में कीड़े/बीमारियों का प्रकोप नहीं हो इसके लिये सीड़ ड्रेसिंग ड्रम द्वारा बीजोपचार करें।

बीजोपचार के लाभ

- शीघ्र अंकुरण
- अंकुरण क्षमता में वृद्धि
- उत्तम पौधा
- अच्छी गुणवत्ता की अधिक उपज
- दलहनी फसलों की ग्रन्थियों में वृद्धि
- विपरीत परिस्थितियों में भी स्वस्थ एवं एकसार विकास
- स्वस्थ एवं पूर्ण विकसित जड़ें
- फसलों की बीज एवं भूमिजनित रोगों से सुरक्षा
- आपकी लागत पर अधिक मुनाफा

सीड़ ड्रेसिंग ड्रम

फसलों की उत्पादकता में बढ़ोतरी करने तथा फसलों में कीड़े/बीमारियों का प्रकोप कम से कम हो इस उद्देश्य से बुवाई से पहले शत–प्रतिशत बीजोपचार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

बीज उपचार करते समय एफ.आई.आर. क्रम का अवश्य ध्यान रखें। बीज को सर्वप्रथम फफूंदनाशक फिर कीटनाशी और अन्त में सवर्ध (कल्चर) से उपचारित करें।

फसलों में वैज्ञानिक तरीके से बीज उपचार करने के लिये नजदीकी ग्राम पंचायत/कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालय पर सीड़ ड्रेसिंग ड्रम उपलब्ध है। किसान भाई अपना बीज व दवा ले जाकर निशुल्क बीज उपचार कर सकते है।

खरीफ फसलों में लगने वाली बीमारियों की रोकथाम व नियंत्रण के लिये फसलवार बीजोपचार की तकनीकी विधि एवं जानकारी इस प्रकार है –

मक्का –बुवाई से पूर्व अनुप्रचारित बीज को 3 ग्राम थाइरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर बीजोपचार कर बुवाई करें। तुलसिता रोग के प्रकोप वाले क्षेत्रों में बीज को 4 ग्राम मेटालेक्सिल दैहिक कवकनाशी प्रति किलो बीज की दर से अवश्य उपचारित करें।

बाजरा –अरगट रोग (गुन्दिया) नियंत्रण हेतु 20 प्रतिशत नमक के घोल (5 लीटर पानी में एक किलोग्राम नमक) में बीज को पाँच मिनट डुबोयें, हिलाकर हल्के बीज व कचरे को छाया में सुखाये। दीमक की रोकथाम हेतु 8.75 मिलीलीटर इमिडाक्लोप्रिड 600 एफ.एस. प्रति किलोग्राम की दर से बीज को उपचारित करें। बीज जनित रोगों के नियंत्रण के लिये एक किलो बीज को 3 ग्राम थायरम से उपचारित करें।

मूंगफली –बीज जनित रोग जैसे कॉलर रोट (गलकट) से बचाव के लिये एक किलो बीज को 3 ग्राम थाइरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 2 ग्राम मेन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. से उपचारित करें। अथवा 8–10 ग्राम ट्राईकोडर्मा से उपचारित कर बोयें। सफेद लट की रोकथाम के लिये 6.5 मिलीलीटर इमिडाक्लोप्रिड 600 एफ.एस. प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

ग्वार –अंगमारी रोग की रोकथाम हेतु बुवाई करने से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 250 पीपीएम एग्रीमाईसीन (1 ग्राम 4 लीटर पानी) के घोल में डेढ़ घण्टे भिगोकर उपचारित करें। जड़ गलन रोग के नियंत्रण के लिये बीज को कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार करें।

सोयाबीन –बीज बोने से पूर्व बीज को 3 ग्राम थाइरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 2 ग्राम कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. द्वारा बीज उपचारित करें। फसल में जड़ गलन बीमारी के नियंत्रण हेतु 6–8 ग्राम ट्राईकोडर्मा जैविक फफूंदनाशी प्रति किलो की दर से उपचारित कर बुवाई करें।

उड़द व अन्य खरीफ दलहन –बुवाई से पहले बीज को 3 ग्राम थाइरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 1 ग्राम कार्बेण्डिाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. से प्रति किलो की दर से उपचारित करें।